40.0 स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : शिक्षा के परिप्रेक्ष्य

- **अंशुमान गुप्ता**, लाइब्रेरी प्रशिक्षु, पी०के० केलकर लाइब्रेरी, आई०आई०टी० कानपुर
  Email- ashumangupta753@gmail.com
- **अरबिन्द कुमार साहु**, शोध छात्र, शिक्षा संकाय, बी०एच०यू०, वाराणसी
  Email- sahooarabindakumar@gmail.com

सारांश

शिक्षा राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिकाओं का क्रियान्वयन करती है। शिक्षा का स्थापत्य विभिन्न दार्शनिकों के विचारों के माध्यम से फलीभूत होता है। भारत में प्राचीन काल से वर्तमान समय तक विभिन्न दार्शनिकों ने शिक्षा के क्षेत्र में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। स्वामी विवेकानन्द को शिक्षा के क्षेत्र में एक महान दार्शनिक के रूप में परिगणित किया जाता है। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सुझाव प्रदान किए हैं। यह अध्ययन स्वामीजी के दो प्रमुख शैक्षिक आयाम, शिक्षा के उद्देश्य, एवं शिक्षण विधियों के नव निर्मित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सुझावों के सहित सामंजस्य स्थापित करने की ओर केंद्रित है। स्वामी विवेकानन्द एवं शिक्षा नीति शैक्षिक उद्देश्य के मानक पर विभिन्न बिन्दुओं में सामंजस्य रखती है। शिक्षण पद्धति के मानक पर केन्द्रीयकरण की विधि, प्रश्नोत्तर विधि, भ्रमण एवं क्रियाविधि, कहानी कथा विधि इत्यादि पर एक दूसरे से मात्राधिक रूप में संबंधित प्रतीत होता है। अपितु व्याख्यान विधि, अनुकरण विधि एवं व्यक्तिगत निर्देशन एवं परामर्श विधि के क्षेत्रों में उभय में कोई संबंध प्रतीत नहीं होता है।

मुख्य शब्द: *स्वामी विवेकानन्द, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शैक्षिक विचार, शैक्षिक समसामयिकता*

शिक्षा

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है सीखने एवं सिखाने की क्रिया। शिक्षा से मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास तथा व्यवहार को परिष्कृत किया जाता है। शिक्षा के द्वारा ही न्यायसंगत समाज की स्थापना तथा राष्ट्रीय विकास को प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा का अर्थ मस्तिष्क में सूचनाओं के भरण से नहीं है, अपितु शिक्षा का अर्थ स्व से परिचित होना है **(ब्रह्मस्थानन्द, 1948, पृ० 6)**। हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो चरित्र का गठन करे, मन को प्रबल करे, बुद्धि का विकास करे और मनुष्य को स्वावलम्बी बनाये।

स्वामी विवेकानन्द एवं शिक्षा

शिक्षा जानकारी की मात्रा नहीं है जो मस्तिष्क में डाल दी जाती है अपितु शिक्षा का वास्तविक अर्थ विचारों का आत्म-करण, जीवननिर्माण-, चरित्र निर्माण आदि होना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द 'मानव-निर्माण शिक्षा' को अपने जीवन का मिशन मानते हैं। विवेकानन्द की परिभाषा, शिक्षा संदर्भ क्षेत्र में उल्लेखनीय अंतर्दृष्टि में से एक है **(बिस्वास, 2018)**। स्वामी विवेकानन्द जी अतीत और वर्तमान भारत के बीच एक सेतु हैं। उनका मिशन जन शिक्षा के माध्यम से मानव जाति की सेवा करना था। एक शताब्दी से अधिक का समय बीत चुका है लेकिन स्वामी जी के विचार आज भी प्रासंगिक है । स्वामी जी ने शिक्षा में रचनात्मक विचारों और दूरदर्शिता को अधिक महत्व दिया है।

स्वामी विवेकानन्द एक आधुनिक विचारक और भविष्योन्मुख शिक्षाविद् थे, जिन्होंने अपने समय की शिक्षा प्रणाली को अस्वीकार करने का साहस किया और समावेशी समाज की दिशा में एक व्यापक कार्य किया। शिक्षा को छात्रकेंद्रित-, न्यायपूर्ण और सभी के लिए समान शिक्षा को अपनाने का प्रस्ताव रखा था। उन्होंने शिक्षा को एक ऐसे माध्यम के रुप में प्रस्तावित किया था कि जो हर स्तर पर शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करती हो- चाहे वह बौद्धिक, नैतिक या आध्यात्मिक हो। उनकी शिक्षा की

योजना व्यापक और पूर्ण थी क्योंकि उनका उद्देश्य युवा शिक्षार्थियों में सभी अनिवार्यताओं को विकसित करना था ताकि वे अपने जीवन का आनन्द प्राप्त कर सके तथा राष्ट्र को विकसित करने में अपना योगदान दे सकें।

भारतीय शिक्षा नीति एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

प्राचीन काल से ही भारतीय शिक्षा पद्धति विश्व प्रसिद्ध रही है। आजादी के बाद से ही भारतीय शिक्षा प्रणाली में बहुत से परिवर्तन आये है। प्रत्येक देश अपनी शिक्षा प्रणाली को और आगे बढ़ाने की योजना बनाता है। भारत में अभी तक तीन शिक्षा नीतियाँ, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, 1986, 1992 PoA के रूप में लायी गई हैं। परन्तु स्वतंत्रता के वर्षो में हमारे देश को प्रगति के जिन 75 सोपानों तक पहुँच जाना चाहिए था वह पहुँच नही सका है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतवर्ष की इसी दिशा की ओर एक पहल 2020 है।

अध्ययन की आवश्यकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत को एक उन्नत राष्ट्र के रूप में परिवर्तित करने की ओर अग्रसर है। शिक्षा नीति विभिन्न 2020 शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों के विचारधारा से प्रभावित रहती है। स्वामी विवेकानन्द ने भारत को संगठित कर आत्म गौरव की भावना पैदा की है। अंधविश्वास से जकड़ी भारतीय जातियों को उन्होंने रूढ़िवादी धारा से मुक्त कराया। वे विभिन्नता में एकता के समर्थक थे। उन्होंने भारतीय समाज को जागृत करके उसे उसका खोया हुआ वैभव प्रदान किया था। यह अध्ययन स्वामी विवेकानन्द जी के द्वारा परिकल्पित भारत का एन०ई०पी० सह सामंजस्य देखने की ओर केंद्रित है। क्या यह शिक्षा नीति उसी तरह के भारत 2020 की कल्पना प्रस्तुत करती है, जैसा स्वामी जी भारत को देखना चाहते थे? इस शिक्षा नीति के जन शिक्षा, समाजवाद, अन्तर्राष्ट्रीय विश्व बधुत्व की अवधारणा को स्वंय में समाहित करना, और नई शिक्षा नीति अतीत के भारतीय गौरव और आधुनिक भारत की आवश्यकताओं को अपने में गर्भित करना इत्यादि विंदुओं पर स्वामी विवेकानन्द के दृष्टिकोण से तारतम्य का अध्ययन करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

१. स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक उद्देश्यों का एन०ई०पी० अध्ययन करना । के संदर्भ में 2020
२. स्वामी विवेकानन्द के द्वारा प्रदत्त शिक्षण विधियों का एन०ई०पी० के संदर्भ में अध्ययन करना। 2020

शोध विधि

यह अध्ययन दार्शनिक अनुसंधान विधि पर केंद्रित है। यहाँ तथ्यों का संकलन उभय प्राथमिक तथा द्वितीयक स्त्रोतों द्वारा किया गया है। इसके अतिरिक्त इस अध्ययन में शोध आधारों की विश्वसनीयता को वाह्य तथा आंतरिक समालोचना के द्वारा स्थापित किया गया है।

इस शोध को शैक्षिक विचार अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार मुख्यतः 2 भाग यथा शैक्षिक उद्देश्य एवं शिक्षण पद्धति में विभाजित किया गया है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शैक्षिक उद्देश्य

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक आयामों के सामंजस्यपूर्ण विकास होना चाहिए। ग्रंथालय तथा पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर विवेकानन्द के अनुसार शैक्षिक उद्देश्य कुछ निम्न प्रकार हैं,

१. शारीरिक विकास

स्वामी जी के अनुसार भारत को अब गीता के अध्ययन की तुलना में फुट बॉल के मैदानों की अधिक आवश्यकता है। स्वस्थ शरीर से ही गीता को उचित प्रकार से समझा जा सकता है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शारीरिक जीवन एवं आत्मानुभूति दोनों के लिए स्वस्थ शरीर को आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द ने प्रतिदिन योग को शारीरिक व्यायाम के रुप में आवश्यक माना है। **(सरकार एवं सरकार, 2015)**।

२. **बौद्धिक विकास**

"स्वामी जी का मानना था कि यदि कोई मनुष्य दिनरात यह सोचता रहता है कि उसमे कुछ नहीं है और वह निम्न है तो वह सचमुच जीवन में कुछ भी नहीं कर सकता है। अगर तुम सोचो कि तुम में कुछ है तुम कुछ कर सकते हो तो तुम में स्वयं ही शक्ति का संचार होगा। यह एक महान सत्य है जिसका स्मरण रखना चाहिए कि हम उस महान शक्ति के उपभाग हैं, तो हम निम्न कैसे हो सकते है? हम सब कुछ हैं और सब कुछ कर सकते हैं।" **(विवेक वाणी- स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएँ, पृ०. 7)** स्वामी विवेकानन्द जी धार्मिक शिक्षा बल देते है क्योंकि वे मानते हैं कि सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़े बिना ब्रह्मचर्य के व्यक्ति न ही अपना मानसिक विकास और न ही अपना शारीरिक विकास कर पायेगा **(पाण्डेय, 2012)**।

३. **समाज सेवा, राष्ट्रीय एकता और विश्व बन्धुत्व**

स्वामी विवेकानन्द जी विश्वबन्धुत्व का आधार राष्ट्रीय एकता को मानते थे **(खड़से, 2016)**। नव्य वेदान्त के अनुसार सम्पूर्ण मानवता में एकत्व विद्यमान है परन्तु उसका विकास क्रमशः होता है। इस समाज सेवा के दायरे में वे पहले राष्ट्रीय चेतना के साथ-साथ विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करने पर जोर देते थे। **(रूबी, 2023)**

१. **व्यावसायिक विकास**

स्वामी जी ने देश की निर्धनता का आधार सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के अभाव को माना था। इसलिए उन्होंने तकनीक, उद्योग शिक्षा और अन्य व्यावसायिक शिक्षा जैसे शिक्षक शिक्षा, वकालत शिक्षा आदि को वर्तमान समाज की प्राथमिक आवश्यकता माना है। **(पाण्डेय, 2012)**

२. **आध्यात्मिकता के गुण का विकास**

आध्यात्मिकता को स्वामी जी मनुष्य जीवन का दूसरा और मुख्य पक्ष मानते थे। उनका स्पष्टीकरण था कि भौतिक विकास आध्यात्मिकता की पृष्ठभूमि में होना चाहिए और आध्यात्मिक विकास भौतिक विकास के आधार पर होना चाहिए। वे इन दोनों प्रकार के विकास को एक साथ करने के पक्ष में थे। **(भट्ट, 2013)**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार शैक्षिक उद्देश्य 2020

हाल ही में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री ने स्कूली छात्रों के लिए रामकृष्ण मिशन के जागृति अभियान का प्रारंभ किया है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य एन०ई०पी० 2020 के दर्शन के अनुरूप बच्चे के समग्र व्यक्तित्व विकास की दिशा को सुनिश्चित करना है। यह अभियान केवल एक से पाँच तक के विद्यार्थियों के लिए संचालित किया गया है। रामकृष्ण मिशन 2014 से मिडिल स्कूल के छात्रों के लिए जागृत नागरिक कार्यक्रम का सफलता पूर्वक संचालन कर रही है, ताकि उन्हें आत्म सम्मानित और जिम्मेदार बनाया जा सके। शिक्षाविदों की ओर से प्राथमिक विद्यालय के छात्रों के लिए इसी के तहत अवेकनिंगध् जागृति अभियान का शुभारंभ किया गया था। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री जी द्वारा बोला गया कि एन०ई०पी० 2020 स्वामी विवेकानन्द के दर्शन से गहराई से प्रेरित है। **(समाचार सेवा प्रभाग, 15 सितंबर, 2022)**। आधारभूत सिद्धांत एवं विभिन्न स्तर के शिक्षा के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के शैक्षिक उद्देश्य निम्नवत हैं।

१. **शारीरिक विकास**

एन०ई०पी० 2020 के शिक्षा के उद्देश्य में शारीरिक शिक्षा के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट विवरण नहीं है। किन्तु नीति के उद्देश्यों में जीवन कौशल जैसे आपसी संवाद, सहयोग, सामूहिक कार्य आदि के बारे में बात की गई है। इन कौशलों के विकास का आधार व्यायाम, क्रीडा, योग आदि के माध्यम से ही सम्भव है। ये समस्त गतिविधियों के द्वारा ही शारीरिक विकास सम्भव है **(अनुच्छेद 4.23,** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 23)।

२. बौद्धिक विकास

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सर्वांगीण विकास होता है लेकिन सर्वांगीण विकास की नींव का कार्य मानसिक विकास द्वारा ही किया जा सकता है। एन०ई०पी० 2020 के उद्देश्यों में बताया गया है कि पाठचर्या का विकास इस रूप में किया जाये जिससे विद्यार्थियों में विषयों के प्रति समझ विकसित हो।

३. समाज सेवा, राष्ट्रीय एकता और विश्व बन्धुत्व

कोई भी देश की महानता संसदीय कार्यों में नहीं अपितु उसके देश के नागरिकों में होती है। स्वामी जी समाज सेवा के अन्दर पहले राष्ट्रीय चेतना उसके उपरान्त विश्व बंधुत्व की चेतना पर बल देते थे। एन०ई०पी० 2020 के अंतर्गत शिक्षा को एक सार्वजनिक सेवा बताया गया है तथा गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्राप्त करना सभी विद्यार्थियों का अधिकार बताया गया है। इसके अतिरिक्त नैतिक, मानवीय, संवैधानिक मूल्यों के साथ राष्ट्रीय एकता की बात कही गई है।

४. व्यावसायिक विकास

शिक्षार्थी को कर्म के हर क्षेत्र में आगे आना चाहिए। इसके लिए उन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्य को उत्पादन, उद्योग कार्य और अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षित करने पर बल दिया। एन०ई०पी० 2020 में व्यावसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का अभिन्न भाग बनाने की बात कही गई।

५. आध्यात्मिक विकास

एन०ई०पी० 2020 में बताया गया है कि प्रज्ञा, ज्ञान और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा का सर्वोच्च लक्ष्य है। प्राचीन भारतीय शिक्षा का लक्ष्य मात्र ज्ञान प्राप्त करना नहीं अपितु पूर्ण ज्ञान और मुक्ति को माना गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पुरातन भारतीय शिक्षा के मूल्यों से अभिप्रेरित है **(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 4)**।

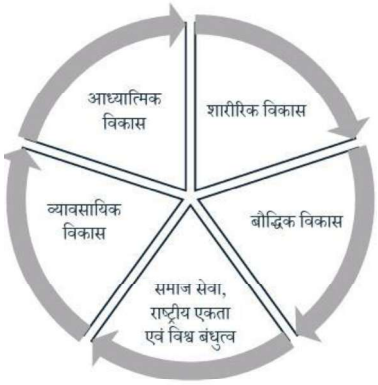

आरेख में 2020 शैक्षिक उद्देश्यों के आधार पर स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति :**1-**तारतम्य

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षण पद्धति

स्वामी विवेकानन्द शिक्षण विधि के सन्दर्भ में धर्म को आधार मानते हुए आध्यात्मिक विधियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। विवेकानन्द के शिक्षण पद्धतियों को हम मुख्य रुप से आठ विभागो विभागों में विभक्त कर सकते है।

१. केन्द्रीयकरण की विधि (एकाग्रता)

स्वामी विवेकानन्द ज्ञान की प्राप्ति का केवल एक ही मार्ग मानते हैं और वह है एकागता । मन की एकाग्रता के द्वारा ही शिक्षण कार्य हो सकता है मानव और पशु में भेद केवल एकाग्रता मात्र का होता है पशु में यह शक्ति कम होती है और मनुष्यों में यह अधिक होती है। मनुष्यों में भेद इसी शक्ति के आधार पर किया जाता है।

२. प्रश्नोत्तर विधि स्वामी विवेकानन्द जी लोगों को अपने मठो तथा वेदान्त केंद्रों पर समयसमय पर वार्तालाप द्वारा ही - शिक्षा प्रदान करते थे। इस विधि का सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि गुरु के साथ ही साथ शिष्य भी शिक्षा प्रक्रिया में क्रियाशील रहता है और वह अपनी शंकाओ का समाधान प्रत्यक्ष रुप से तत्काल प्राप्त कर लेता है।

३. भ्रमण एवं क्रियाविधि

भ्रमण तथा क्रियाविधि को भी स्वामी विवेकानन्द जी पर्याप्त महत्व देते हैं, क्योकि स्वंय उन्होंने भी गृह त्याग के उपरान्त अनेक साधु सन्तो के सम्पर्क में वेदान्त, दर्शन, योग व धर्म की शिक्षा प्राप्त की थी।

४. कहानी कथा विधि

स्वामी विवेकानन्द ने कहानी कथन विधि को भी शिक्षा प्रदान हेतु उपयोगी बताया है। उन्होंने अपने व्याख्यानों में अनेकों कहानियों का प्रयोग किया है जैसे नेवले की कहानी, गधे की कहानी, गधे से घोडे बनने की कहानी इत्यादि।

आरेख-2: शिक्षण पद्धति के आधार पर स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में तारतम्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षण पद्धति 2020

एन०ई०पी० 2020 में शिक्षण प्रक्रिया को लचीली, बहुआयामी गतिविधि आधारित, खोज आधारित बनाने के लिए कहा गया है। इससे विद्यार्थियों में समस्या समाधान और सृजनात्मकता की वृद्धि होगी।

केन्द्रीयकरण की विधि

स्वामी विवेकानन्द जी ने एकाग्रता को ज्ञान प्राप्ति का मूल मंत्र मानते हुए स्पष्ट किया है कि ज्ञान प्राप्ति के लिए केवल एक ही मार्ग है और वह एकाग्रता है। मन की एकाग्रता ही शिक्षा का सम्पूर्ण सार है। ज्ञानार्जन के लिए निम्नतम श्रेणी के मनुष्य से लेकर उच्चतम योगी तक को इसी एक मार्ग का अवलंबन करना पड़ता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अनुच्छेद 22.1 में भारत के प्राचीन को साहित्य को पढ़ना, योग एवं ध्यान का अभ्यास करना, भारत के वैविध्यपूर्ण संगीत एवं कला की सराहना करने के ऊपर बल दिया गया है जिनके माध्यम से दुनिया भर के करोड़ो लोग इस संस्कृति परिचित हो सके **(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 86)**। इसमें योग और ध्यान को भारतीय संस्कृति का हिस्सा तो बताया गया है लेकिन ध्यान का प्रयोग एक शिक्षण विधि के रूप करने की बात नहीं कही गई है।

प्रश्नोत्तर विधि

स्वामी विवेकानन्द जी लोगों को अपने मठों तथा वेदान्त केन्द्रों पर समय-समय पर वार्तालाप द्वारा ही शिक्षा प्रदान करते थे। इस विधि का सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि गुरु के साथ ही साथ शिष्य भी शिक्षा प्रक्रिया में क्रियाशील रहता है और वह अपनी शंकाओं का समाधान प्रत्यक्ष रूप से तत्काल प्राप्त कर लेता है। अनुच्छेद 4.5 में बताया गया कि विषयवस्तु शिक्षण का केन्द्रीय बिन्दु विचार, अनुप्रयोग और समस्या समाधान होगा। इसलिए शिक्षण और अधिगम में संवाद और प्रश्नोत्तर पर बल दिया जायेगा **(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 18)**। माता पिता से विद्यार्थी को जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग किया जायेगा **(अनुच्छेद 4.36, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 27)**। विद्यार्थी की विषयी समक्ष को जानने के लिए प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग किया जायेगा **(अनुच्छेद 4.38, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 28)**।

भ्रमण एवं किया विधि

भ्रमण तथा क्रिया विधि को भी स्वामी जी ने पर्याप्त महत्व प्रदान किया है। ई.सी.सी.ई. में मुख्यतः खेल आधारित और गतिविधि आधारित शिक्षा को शामिल किया जायेगा **(अनुच्छेद 1.2, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 9)**। विद्यार्थी पढ़ाई के दौरान 'द लैंग्वेजेज ऑफ इंडिया' पर एक मजेदार प्रोजेक्ट तैयार करेंगे। उदाहरण ग्रेड 6-8 में एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल। इस गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थी भारतीय भाषाई संपन्नता से परिचित होंगे **(अनुच्छेद 4.16, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 21)**। छात्रों द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में भ्रमण करने जैसी सरल गतिविधियों को शामिल किया जायेगा जिससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि भारत के विभिन्न हिस्सों की विविधता, संस्कृति, परम्पराओं और ज्ञान के प्रति समझ बढ़ेगी **(अनुच्छेद 22.12, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 89)**। जब तक ऑनलाइन शिक्षा को अनुभवात्मक और गतिविधि आधारित शिक्षा के साथ मिश्रित नहीं किया जाता तब तक यह सीखने के सामाजिक भावात्मक और साइकोमोटर आयामों पर सीमित फोकस वाली एक स्क्रीन आधारित शिक्षा मात्र ही बनकर रह जायेगी **(अनुच्छेद 24.3, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 96)**।

कहानी कथा विधि

स्वामी विवेकानन्द जी कहानी कथा विधि को भी शिक्षा देने का एक महत्वपूर्ण माध्यम मानते हैं क्योंकि इससे विषय की नीरसता दूर हो जाती है और विद्यार्थी में पाठ्य के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। अनुच्छेद 4.6 में बताया गया है कि प्रयोग आधारित अधिगम को अपनाया जाएगा। प्रत्येक विषय में कला और खेल को एकीकृत किया जाएगा और कहानी आधारित शिक्षण शास्त्र को प्रत्येक विषय में एक मानक शिक्षण शास्त्र के तौर पर प्रस्तुत किया जायेगा **(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 18)**। संस्कृत साहित्य में गणित, दर्शन, व्याकरण, संगीत, राजनीति, चिकित्सा, वास्तुकला, धातु विज्ञान, नाटक, कविता, कहानी और बहुत कुछ के विशाल खजाने हैं। इन सबको विभिन्न धर्मों के लोगों के साथ-साथ गैर धार्मिक लोगों और जीवन के सभी क्षेत्रों और सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के लोगों द्वारा हजारों वर्षों से लिखा गया है **(अनुच्छेद 4.17, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 21)**। सी.पी.डी. के अवसरों में विशेष रूप से बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के नवीनतम शिक्षण शास्त्र अधिगम परिणामों के अनुभवात्मक शिक्षण कला, एकीकृत खेल, एकीकृत और कहानी आधारित दृष्टिकोण आदि को क्रमबद्ध रुप में सम्मिलित किया जाएगा **(अनुच्छेद 5.15, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृ० 34)**।

निष्कर्ष-

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार होती है। स्वामी विवेकानन्द जी ने जीवन के कई क्षेत्रो में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं, जिसमें से शिक्षा एक प्रमुख आयाम है। वर्तमान समय में किसी भी देश की शैक्षिक गतिविधियों का आधार उस देश की शिक्षा नीति होती है। प्रस्तुत अध्ययन में स्वामी विवेकानन्द और एन०ई०पी० 2020 के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया गया है। इसके मुख्य आधार शैक्षिक उद्देश्य, पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियाँ है। अध्ययन के शैक्षिक उद्देश्य के आयाम में शारीरिक, बौद्धिक, समाज सेवा, राष्ट्रीय एकता, विश्व बन्धुत्व, व्यावसायिक तथा त्याग की भावना के विकास में से 4 आयामों में समानता है। शिक्षण पद्धति के आयाम में स्वामी विवेकानन्द के विचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सुझाव में केन्द्रीयकरण, प्रश्नोत्तर विधि, भ्रमण एवं क्रिया विधि, कहानी कथा विधि के बिन्दुओं पर समानता परिलक्षित होती है।

संदर्भ सूची

ओड़, एल. के. (1994). *शिक्षा का दार्शनिक पृष्ठभूमि* (चतुर्थ संस्करण). राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी

उपाध्याय, एस .में महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का प्रतिबिंबन 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति .(2021) *.प्राथमिक शिक्षक,* (2)*45*, .58-52

कल्याणी, पीनैशनल एजुकेशन पॉलिसी] 2020 ०पी०ई०ऍन एम्पिरिकल स्टडी ऑन एन .(2020) ., विद स्पेशल रेफरेन्स टू द फ्यूचर ऑफ इंडियन एजुकेशन सिस्टम एण्ड इट्स इफेक्टस् ऑन द स्टेकहोल्डर्स .[*जर्नल ऑफ मैनेजमेन्ट इंजीनियरिंग एण्ड इनफोर्मेशन टेक्नॉलजी,* (5)*7*, .17-1https://zenodo.org/records/4159546

खड़से, यू.एम., & सिंह, एस. (2016). ए कम्पैरिजन ऑफ कॉनटेंपोरारी डाईमेनसन्स ऑफ एजुकेशन विद दैट ऑफ द डाईमेनसन्स ऑफ मैन-मेकिंग एजुकेशन ऑफ स्वामी विवेकानन्द. *ऑनलाइन इंटरनेशनल इन्टरडिसप्लनेरी रिसर्च जर्नल, 6*(2), 213-218.

गुप्ता, एस .एजुकेशन एण्ड सोसाइटी स्वामी विवेकानन्द फिलोसोफी इन रीलेशन टू .(2012) .*इंडियन स्ट्रीम रिसर्च जर्नल,* (9)*2*

झरे, पी .वर्तमान शिक्षा समस्याओं के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द शिक्षा दर्शन .(2016) .*देव संस्कृतिः इन्टरडिसप्लनेरी इंटरनेशनल जर्नल,* .50-47 ,*8*

दत्ता, टी .(1978) .एस.*अ स्टडी ऑफ थे फिलोसोफी ऑफ विवेकानन्द विद रेफरेन्स तो अद्वैतवेदान्त एण्-ड ग्रेट यूनिवर्सल हार्ट ऑफ बुद्धथीसिस* ०डी०पीएच] , कला विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय[.

दत्ता, टी .(1978) .एच.*अद्वैत वेदान्त और महान सार्वभौमिक हृदय बुद्ध के संदर्भ में विवेकानन्द के दर्शन का अध्ययन* थीसिस ०डी०पीएच], शिक्षा संकाय, गोहाटी विश्वविद्यालय[. http://hdl.handle.net/10603/246966

ग्रोट्ज, टी) .n.d 25 .टेसला मेमोरियल सोसाइटी ऑफ न्यू यॉर्क .निकोला टेसला एण्ड स्वामी विवेकानन्द .(.सितंबर को 2023 https://www.teslasociety.com/tesla_and_swami.html

निथिया, पी .स विऊज ऑन फिलोसोफी ऑफ एजुकेशन'स्वामी विवेकानन्द .(2012) .*एशियन जर्नल ऑफ मल्टिडाइमेन्शनल रिसर्च,* (6)*1*, 48-42

पाण्डेय, एस् .(2012) .*मानवता के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन* ०डी०पीएच] . थीसिस, डॉ[राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय .. http://hdl.handle.net/246966/10603

बर्मन, पी., भट्टाचार्य, डीमेंकिंग थ्रू मॉरल वैल्यूस एण्ड कैरेक्टर डेवलपमेंट एण्ड इट्स -स थॉट ऑन मैन'विवेकानन्द .(2012) . .रेलेवन्सी इन स्कूल एजुकेशन*इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसप्लनेरी एजुकेशन रिसर्च,* (2)*1*, 37-30

बिस्वास, एसथॉटस् एण्ड आइडियास ऑफ स्वामी विवेकानन्द ऑन एजुके .(2018) .शन .अ ब्रीफ स्टडी -*जर्नल ऑफ इमर्जिंग् टेक्नॉलजीस् एण्ड इन्नोवेटिव रिसर्च,* (8)*5*, 20-16

ब्रह्मस्थानन्द .(2002)*विवेकवाणी* रामकृष्ण मठ .*(स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएँ)*

मानव संसाधन विकास मंत्रालय .(2020)*राष्ट्रीय शिक्षा नीति* भारत सरकार .*2020*

मिश्र, एम.(2017) . स्वामी विवेकानन्द के साहित्य में निहित सामाजिक चेतन संबंधी विचार .*रिव्यू ऑफ रिसर्च,* (10)*6*, 4-1

सरकार, आर., सरकार, बीस आइडिया ऑफ फिजिकल एजुकेशन इन प्रेजेंट डे 'रेलिवेंस ऑफ स्वामी विवेकानन्द .(2015) . .कांटेक्स्टइंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसप्लनेरी आप्रोच एण्ड स्टडीस, (3)*2*, 7-1

सिंह, एस .(2002) .के .*स्वामी विवेकानन्द के दर्शन का भारतीय शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में एक आलोचनात्मक अध्ययन* थीसिस ०डी०पीएच], शिक्षा विभाग, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय[. http://hdl.handle.net/180268/10603

रूबी .स विजन एण्ड इंडियन एजुकेशन सिस्टम'स्वामी विवेकानन्द .(2023)*इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अप्लाइड रिसर्च,* (2)*9*, .245-242https://doi.org/10.22271/allresearch.2023.v9.i2d.10619

विवेकानन्द, स1894) ., मार्च .(3*स्वामी विवेकानन्द का किडी या सिंगारावेलु मुदालियार को लिखा गया पत्र, .1894* हिन्दी पथ https://hindipath.com/swami-vivekananda-ke-patra-kidi-singaravelu-mudaliar--3march-/1894amp/